रात्री क्लास 25-2-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

भाषण करना है। प्रैक्टीस होगी। सीखेंगे भी। खुशी होगी। स्टुडन्ट पढ़ते2 टीचर बन जाये तो खुशी की बात है ना। टीचर तो सब को बनना ही है। गाईड बनना है। बाप नहीं बन सकते। तुम ब्राह्मण सब गाईड हो। तुम हो ही पण्डे। पण्डे यात्रा पर ले जाते हैं। तो तुम भी पण्डे के बच्चे पण्डे हो। यह है पाण्डव सेना। सम्पूर्ण पवित्र बनना है। निश्चय है वापस जरूर जाना है। फिर आना है नई दुनिया में। वापस जाने के लिए ही बाप समझाते हैं मनमनाभव। पतित-पावन को याद करना है। याद के लिए ही बाप ज्ञान देते हैं कि ऐसे याद करो। इसलिए याद की यात्रा कहा जाता। बाकी वह यात्रायें तो अनेक हैं। बच्चे तो बहुत सर्विस करते रहते हैं। टापिक्स पर भाषण करेंगे। बाबा को टापिक्स लिख कर भेजी थी। बाबा ने लिखा था पहले विचार सागर मंथन कर लिखना है। शुरू में कराची में रात को 2 बजे हम वाणी लिखते थे। बच्चों को भी प्रैक्टीस करनी है। सिर्फ लिखत पढ़नी नहीं है। ओरली भाषण करना अच्छा है। है तो समझाना बहुत सहज। बाप का परिचय देना है। ऊंच ते ऊंच भगवान तो कहते हैं ना। यह बाबा ने कहा था लिखो हम परमपिता परमात्मा के बायोग्राफी सुनावेंगे। शिवजयन्ती गाई जाती है, उसने क्या आकर किया। जयन्ति है तो जीवनकहानी भी चाहिए। जब तुम समझाते हो तो समझते हैं बराबर भगवान एक है। बाकी ज्ञान यज्ञ में विघ्न तो पड़ेंगे ना। मूल बात विघ्न पड़नी ही है विकार पर। विघ्न डालते हैं माया के मुरीद। फिर भी यहां ही आवेंगे। जावेंगे कहां। बच्चों को पता है विघ्न पड़ेंगे। बाप कहते हैं याद की यात्रा में रहो। लिखते हैं बाबा हम प्रवास हो जाते हैं। बाप कहते हैं इस हालत में पाप नहीं होता है। मूल बात है याद की यात्रा की। यात्रा की पढ़ाई बहुत सहज है। बाप दिन प्रति दिन गुह्य2 पाईन्ट सुनाते ही रहते हैं। सबजेक्ट। यह भी सा0 किया है पुरानी दुनिया का विनाश नई दुनिया की स्थापना। बाप को याद करने में ही मेहनत है। इसमें खर्चा आदि कुछ नहीं। शान्ति लगी पड़ी है। स्वधर्म है ही शान्त। स्वधर्म में टिकने लिए डायरेक्शन मिलती है। यह भी जानते हो कल्प2 अनेक बार पढ़ी है। देवीगुण धारण करने में मुख्य मायावी पुरुषों की विघ्न पड़ती है। काम का क्रोध का भूत होता है ना। भूत सम्प्रदाय वा आसुरी सम्प्रदाय बात एक ही है। आसुरी सम्प्रदाय क्यों कहा जाता है क्योंकि उन में 5 भूत है। रावण द्वारा हराया है। यह है ही भूतों का राज्य। मनुष्य भक्ति मार्ग में कितना घमण्ड में रहते हैं। जहां पतित पुजारी है वहीं पतित-पावन पूज्य हो नहीं सकता। देवी-देवतायें पूज्य हैं ना। बाप कहते हैं अभी मैं आया हूं तुम बच्चों को ले जाने। यह कब्रस्थान है ना। तो कोई भी देहधारी आदि में मोहन रखना है। अभी तो हम जाते हैं। ज्ञान का अभ्यास बुधि में रहे। हम तो नये सम्बन्ध में जाते हैं। फिर पुराने सम्बन्ध से इतनी दिल नहीं लगेगी। कम कार डे दिल यार डे। तुम पुराने आशुक हो एक माशुक के। माशुक भी देखो कैसा है। सब को स्वच्छ बना देते हैं। बाप है अविनाशी सर्जन। ज्ञान अर्जन भी बाप द्वारा ही मिलता है। यह है ऊंच ते ऊंच बनने लिए। स्प्रीच्युन नालेज रूहानी बाप रूहानी बच्चों को ही देते हैं। और कोई का ड्रामा में पार्ट है नहीं। तुम्हारा बाप ही रूहानी टीचर भी है। तुम्हारी भाषा ही अलग है। नई दुनिया के लिए नया ज्ञान है। देने वाला भी नया है। अच्छा कल शिवजयन्ति है। बाबा को निमंत्रण भेज देंगे। देखें आते हैं। कुछ आकर बोलते हैं। यह रसम रिवाज है। बाबा को ड्रामाअनुसार भी खुद निमंत्रण दे बुलाते हैं। कुछ पूछना होता है तो। बाप को बुलाने का भी ड्रामा में पार्ट है। ड्रामा के राज़ पर चलना है। जो कुछ पास्ट हुआ, ऐसे नहीं न करते तो ऐसा होता। यह घूटके खाना भी रांग है। मिती को चितवो नहीं। अभी तुम फरिश्ते बनते हो। इसलिए कल सारा दिन सफेद ड्रेस ही पहननी है। यही चादरें भी सफेद डाल देंगे। रंगीन कोई कपड़ा न हो। तो फरिश्तेपन की भासना आवे। भोजन के लिए भी कह दिया है जितना हो सके सफेद हो। अच्छा मीठे 2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।